

पद चालीस का गुप्त इतिहास — संख्या चौबीस

यहेजकेल संख्या पाँच

Jeff Pippenger

2026-08-10

टेस्टिमोनिज़, खंड पाँच, के उस अंश में, जिस पर हम अब कई लेखों से विचार कर रहे हैं; हमें उस मन्दिर के दर्शन के विषय में बताया गया है, जो यहेजकेल, यशायाह और यूहन्ना को दिया गया था:

“ये शिक्षाएँ हमारे लाभ के लिए हैं। हमें अपना विश्वास परमेश्वर पर स्थिर रखना चाहिए, क्योंकि हमारे ठीक सामने ऐसा समय है जो मनुष्यों की आत्माओं की परीक्षा लेगा। मसीह ने जैतून पर्वत पर अपनी दूसरी आगमन से पहले होने वाले भयानक न्यायों का वर्णन करते हुए कहा: ‘तुम युद्धों और युद्धों की अफवाहों के विषय में सुनोगे।’ ‘जाति जाति के विरुद्ध, और राज्य राज्य के विरुद्ध उठ खड़ा होगा; और विभिन्न स्थानों में अकाल, महामारियाँ, और भूकम्प होंगे। ये सब पीड़ाओं का आरम्भ हैं।’ यद्यपि इन भविष्यवाणियों की आंशिक पूर्ति यरूशलेम के विनाश के समय हुई, तथापि इनका अधिक प्रत्यक्ष प्रयोग अन्तिम दिनों पर होता है।”

आव की नवमी

तिशा ब'आव, जिसका इब्रानी में अर्थ है “आव का नौवाँ दिन,” यहूदियों का वह दिन है जो 586 ईसा-पूर्व में बाबुलियों द्वारा प्रथम मन्दिर के विनाश और सन् 70 में टाइटस द्वारा द्वितीय मन्दिर के विनाश का स्मरण कराता है। ये दोनों विनाश एक ही पंचांग-तिथि पर हुए थे—इब्रानी महीने आव के 9वें दिन (जो सामान्यतः ग्रेगोरियन पंचांग के अनुसार जुलाई या अगस्त में पड़ता है)। जब सिस्टर व्हाइट यरूशलेम के विनाश को अंतिम दिनों में “उस समय” के साथ संयोजित करती हैं “जो मनुष्यों के प्राणों की परीक्षा लेगा,” तब वह दो ऐसे विनाशों की पहचान कर रही हैं, जो दोनों ही शीघ्र आने वाले रविवार के विधि-विधान का चित्रण करते हैं।

दानियेल ग्यारह का सोलहवाँ पद उस रविवार-विधि का प्रतिनिधित्व करता है, और इकतालीसवें पद के साथ संगति रखता है। यहेजकेल में यरूशलेम के विनाश का उपयोग रविवार-विधि के समय बुद्धिमान और मूर्ख कुँवारियों के पृथक्करण को चित्रित करने के लिए किया गया है। यहेजकेल बाबुल में बंदी था जब वह अध्याय आठ से ग्यारह में उसी पृथक्करण को देखने के लिए चमत्कारिक रूप से यरूशलेम पहुँचा दिया गया।

और छठे वर्ष में, छठे महीने के पाँचवें दिन, जब मैं अपने घर में बैठा था और यहूदा के पुरनिये मेरे सामने बैठे थे, तब वहाँ प्रभु यहोवा का हाथ मुझ पर आ पड़ा। तब मैंने देखा, और देखो, आग के सदृश एक स्वरूप था; उसकी कटि के रूप के नीचे की ओर आग थी, और उसकी कटि के रूप के ऊपर की ओर ज्योति का सा प्रकाश था, जो कहरूबे के रंग के समान था। और उसने हाथ का सा एक आकार बढ़ाया, और मेरे सिर की एक लट पकड़ ली; तब आत्मा ने मुझे पृथ्वी और आकाश के बीच उठा लिया, और परमेश्वर के दर्शनों में मुझे यरूशलेम में, भीतर के उस फाटक के द्वार पर, जो उत्तर की ओर मुख किए हुए था, ले आई; जहाँ ईश्या की उस मूर्ति का आसन था, जो ईश्या उत्पन्न करती है। यहेजकेल 8:1-3.

आठ से ग्यारह तक के चार अध्याय उस पृथक्करण का वर्णन हैं, और सिस्टर व्हाइट, जब वह यहेजकेल 9 पर टिप्पणी करती हैं, तो न केवल यह स्पष्ट करती हैं कि वह प्रकाशितवाक्य अध्याय 7 वाली वही मुहरबंदी थी, बल्कि यह भी कि यरूशलेम अंतिम दिनों में लौदीकिया की दशा में स्थित सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया का प्रतिनिधित्व करता है।

“जो वर्ग अपनी ही आत्मिक पतनावस्था पर शोकाकुल नहीं होता, और न ही दूसरों के पापों पर विलाप करता है, वह परमेश्वर की मुहर के बिना छोड़ दिया जाएगा। प्रभु अपने दूतों को—जिनके हाथों में संहार के हथियार हैं—यह आज्ञा देते हैं: ‘उसके पीछे-पीछे नगर में होकर जाओ, और मारो; न तुम्हारी आँख तरस खाए, और न तुम

दया करो: बूढ़ों और जवानों, दोनों कुमारियों, और छोटे-छोटे बालकों, और स्त्रियों—सबको सर्वथा घात करो; परन्तु जिस किसी मनुष्य पर वह चिह्न हो, उसके पास न जाना; और मेरे पवित्रस्थान से आरम्भ करना। तब उन्होंने उन पुरनियों से आरम्भ किया जो भवन के साम्हने थे।”

“यहाँ हम देखते हैं कि कलीसिया—प्रभु का पवित्रस्थान—परमेश्वर के क्रोध का प्रहार सबसे पहले उसी पर हुआ। वे प्राचीन पुरुष, जिन्हें परमेश्वर ने महान ज्योति दी थी और जो लोगों के आत्मिक हितों के रक्षक के रूप में खड़े रहे थे, उन्होंने अपने विश्वासयोग्य दायित्व के साथ विश्वासघात किया था। उन्होंने यह स्थान ले लिया था कि हमें चमत्कारों और परमेश्वर की सामर्थ्य के उन विशिष्ट प्रकटीकरणों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, जैसे पूर्वकाल में हुआ करते थे। समय बदल गया है। ये वचन उनके अविश्वास को दृढ़ करते हैं, और वे कहते हैं: यहोवा न भलाई करेगा, और न बुराई करेगा। वह अपनी प्रजा पर न्याय करने के लिए दण्ड देने में अति दयालु है। इस प्रकार ‘शान्ति और सुरक्षा’ उन मनुष्यों का घोष है जो फिर कभी तुरही के समान अपना स्वर ऊँचा करके परमेश्वर की प्रजा को उनके अपराध और याकूब के घराने को उनके पाप न दिखाएँगे। ये गूँगे कुत्ते, जो भौंकना नहीं चाहते थे, वही एक अपमानित परमेश्वर के धर्मसंगत प्रतिशोध का अनुभव करते हैं। पुरुष, युवतियाँ, और छोटे-छोटे बच्चे सब के सब एक साथ नाश हो जाते हैं।”

“जिन घृणित कर्मों के कारण विश्वासयोग्य जन आहें भर रहे थे और विलाप कर रहे थे, वे सब केवल उतने ही थे जितने सीमित नेत्रों से देखे जा सकते थे; परन्तु उनसे कहीं बढ़कर वे सबसे भयंकर पाप, जो शुद्ध और पवित्र परमेश्वर की जलन को भड़काते थे, प्रकट नहीं किए गए थे। हृदयों का महान खोजी अधर्म के काम करने वालों द्वारा गुप्त में किए गए प्रत्येक पाप को जानता है। ये लोग अपने छल में निश्चिन्त अनुभव करने लगते हैं और, क्योंकि वह दीर्घसहनशील है, कहते हैं कि यहोवा देखता नहीं, और फिर ऐसे आचरण करते हैं मानो उसने पृथ्वी को त्याग दिया हो। परन्तु वह उनकी कपटता को प्रकट करेगा और दूसरों के सामने उन पापों को खोलकर रख देगा जिन्हें छिपाने में वे इतने सावधान थे।”

“पद, गरिमा, या सांसारिक बुद्धि की कोई भी श्रेष्ठता, पवित्र पद में कोई भी स्थिति, मनुष्यों को सिद्धांत का बलिदान करने से नहीं बचाएगी, जब वे अपने ही छलपूर्ण हृदयों पर छोड़ दिए जाते हैं। जिन्हें योग्य और धर्मी समझा गया है, वे धर्मत्याग में अगुवे और उदासीनता तथा परमेश्वर की दयाओं के दुरुपयोग में उदाहरण सिद्ध होते हैं। वह उनके दुष्ट आचरण को अब और सहन नहीं करेगा, और अपने क्रोध में वह उनके साथ बिना दया के व्यवहार करता है।”

“जो लोग महान ज्योति से धन्य किए गए हैं और जिन्होंने दूसरों की सेवा करते हुए वचन की शक्ति का अनुभव किया है, उनसे प्रभु अनिच्छापूर्वक अपनी उपस्थिति हटा लेता है। वे कभी उसके विश्वासयोग्य सेवक थे, जिन्हें उसकी उपस्थिति और मार्गदर्शन का अनुग्रह प्राप्त था; परन्तु वे उससे दूर हो गए और दूसरों को भी भ्रान्ति में ले गए, और इसलिए वे दैवी अप्रसन्नता के अधीन कर दिए जाते हैं।” टेस्टिमनीज़, खंड 5, 211, 212.

यहेजकेल की संपूर्ण पुस्तक यरूशलेम के विनाश की पृष्ठभूमि में स्थित है। यहेजकेल की गवाही में नबूकदनेस्सर की वह घेराबंदी, जो डेढ़ वर्ष तक चली, विशेष रूप से चिह्नित की गई है; परन्तु मत्ती चौबीस में यीशु की चेतावनी का “अधिक प्रत्यक्ष प्रयोग” अंतिम दिनों में है। यहेजकेल में सत्य की वह धारा चौबीसवें अध्याय में पाई जाती है।

१५ जनवरी, ५८८ ईसा-पूर्व

फिर नौवें वर्ष में, दसवें महीने के दसवें दिन यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा, और उसने कहा, हे मनुष्य के सन्तान, इस दिन का नाम लिख ले, अर्थात् इसी दिन का; बाबुल के राजा ने इसी दिन यरूशलेम के विरुद्ध अपना घेरा डाल दिया है। यहेजकेल 24:1, 2.

उस तिथि को, जो अन्य बाइबिलीय साक्ष्यों द्वारा भी स्थापित है, अठारह महीनों की एक घेराबन्दी आरम्भ हुई। उस तिथि पर यहेजकेल के पास जो यहोवा का वचन पहुँचा, उसमें रक्तरंजित नगर का दृष्टान्त था, जिसे उबलते हुए बर्तन के द्वारा चित्रित किया गया है और जिसके पश्चात् एक बड़ी आग आती है। यह दृष्टान्त स्पष्ट रूप से यरूशलेम पर आने

वाले न्याय का प्रतिनिधित्व करता है, और उसी अध्याय में इसके पश्चात् यहजकेल की पत्नी का आघात से मृत्यु को प्राप्त होना एक चिन्ह के रूप में वर्णित है कि वह घेराबन्दी, जो अन्ततः पवित्रस्थान का विनाश कर देगी, आरम्भ हो चुकी थी।

फिर यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा, और उसने कहा, हे मनुष्य के सन्तान, देख, मैं एक ही आघात से तेरी आँखों की अभिलाषा तुझ से छीन लेता हूँ; तौभी तू न विलाप करेगा, और न रोएगा, और न तेरे आँसू बहेंगे। चुपचाप कराहता रह; मेरे हुओं के लिए शोक न कर; अपनी पगड़ी अपने सिर पर बाँधे रख, और अपने पैरों में जूतियाँ पहने रह, और अपने होंठ न ढाँक, और लोगों की दी हुई रोटी न खा। सो मैं ने बिहान लोगों से यह बात कही; और साँझ को मेरी पत्नी मर गई; और मैं ने प्रातः वैसा ही किया जैसा मुझे आज्ञा दी गई थी। यहजकेल 24:15-18।

तब यहजकेल के आस-पास के लोगों ने उस दृष्टान्त और उसकी पत्नी की मृत्यु का अर्थ पूछा।

तब लोगों ने मुझसे कहा, क्या तू हमें न बताएगा कि ये बातें हमारे लिये क्या अर्थ रखती हैं, कि तू ऐसा करता है? तब मैंने उन्हें उत्तर दिया, यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा, कि इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है: देखो, मैं अपने पवित्रस्थान को अपवित्र करूँगा, जो तुम्हारी शक्ति का गौरव, तुम्हारी आँखों की अभिलाषा, और वह है जिस पर तुम्हारा मन तरस खाता है; और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ, जिन्हें तुम छोड़ आए हो, तलवार से गिरेंगे। यहजकेल 24:19-21.

इस अंश में यहजकेल की पत्नी और पवित्रस्थान—दोनों को ही “तेरी आँखों की अभिलाषा” के रूप में पहचाना गया है। बाइबिलीय इतिहासकारों के अनुसार घेराबंदी अठारह महीने तक चली, जबकि केस्तियुस और तीतुस की घेराबंदियाँ सन् 66 से सन् 70 तक चार वर्ष चलीं। केस्तियुस की पहली घेराबंदी से लेकर विनाश तक के समय की सूक्ष्म गणना साढ़े तीन वर्ष ठहरती है, परन्तु “समावेशी गणना” को लागू करने पर, जो बाइबल में सर्वाधिक प्रचलित रीति है, यह चार वर्ष होती है। यह जानना कि दोनों प्रकार की गणनाएँ मान्य हैं, हमें केस्तियुस से तीतुस तक साढ़े तीन वर्ष और साथ ही चार वर्ष—दोनों देखने की अनुमति देता है।

यरूशलेम के दो विनाशों में हमारे पास रविवार व्यवस्था के दो साक्षी हैं, और इन दोनों इतिहासों के विवरण को शीघ्र आने वाली रविवार व्यवस्था पर लागू किया जाना है—जहाँ लौदीकिया प्रभु के मुख से उगल दी जाती है। नबूकदनेस्सर की घेराबंदी के आरम्भ को यहजकेल की पत्नी की मृत्यु द्वारा चिह्नित किया गया है। उसकी मृत्यु पर यहजकेल को खुलकर शोक करने की आज्ञा नहीं दी गई, क्योंकि वह यहूदियों के बंधुआई में ले जाए जाने का चिन्ह था।

66 से 70 की चार-वर्षीय अवधि का आरम्भ उजाड़ने वाली घृणित वस्तु के चिन्ह द्वारा चिह्नित होता है, जो यरूशलेम के मसीहियों के लिए भाग जाने का चिन्ह था।

इसलिए जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को, जिसके विषय में दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया है, पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो, (जो पड़े, वह समझ ले:) तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ। मत्ती 24:15,16

दो घेराबंदियाँ जो स्पष्ट रूप से एक-दूसरे के अनुरूप हैं, और दोनों घेराबंदियों के आरम्भ में एक “चिह्न” विद्यमान है। जब यहजकेल ने समझाया कि उसकी पत्नी की मृत्यु और उसकी ओर से शोक न करने का क्या अभिप्राय था, तब उसने उसका वर्णन किया और फिर लिखित रूप में दर्ज किया:

इस प्रकार यहजकेल तुम्हारे लिए एक चिन्ह है; जो कुछ उसने किया है, उसी के अनुसार तुम भी करोगे; और जब यह घटित होगा, तब तुम जान लोगे कि मैं ही प्रभु यहोवा हूँ। यहजकेल 24:24.

यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु का चिन्ह यरूशलेम और मन्दिर के शीघ्र आनेवाले विनाश तथा उसके पश्चात् बाबुल की बन्धुआई की पहचान था। दानियेल के द्वारा कही गई उजाड़नेवाली घृणित वस्तु का चिन्ह उस विनाश से बच निकलने की चेतावनी था, परन्तु दोनों घेराबन्दियों के आरम्भ में एक चिन्ह है।

आसन्न रविवार व्यवस्था से पूर्व एक भविष्यद्वाणीपरक घेराबन्दी होगी, और यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु इस बात का प्रतीक है कि लौदीकिया की सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया को पूरी रीति से पार कर दिया गया है; जबकि यहेजकेल एक लाख चवालीस हजार का प्रतीक है, और उस ध्वज का भी प्रतीक है जो घेराबन्दी के प्रारम्भ में ऊँचा उठाया जाता है। बाबुल की घेराबन्दी के प्रारम्भ में यहेजकेल एक लाख चवालीस हजार का ध्वज है, और प्रारम्भ में उजाड़नेवाली घृणित वस्तु का चिन्ह रोम का “चिन्ह” है। एक चिन्ह आन्तरिक चेतावनी की ओर संकेत करता है और दूसरा बाहरी चेतावनी की ओर। निःसन्देह सन् 66 में मसीहियों को एक चेतावनी दी गई थी, परन्तु चेतावनी का चिन्ह रोम था। बाबुल के विनाश में चिन्ह यहेजकेल की पत्नी थी। रोम उस वर्ग का प्रतीक है जो पशु की छाप प्राप्त करते हैं, और यहेजकेल उनका चिन्ह है जो परमेश्वर की मुहर प्राप्त करते हैं।

दो समाप्तिकालीन अवधियाँ

पहला घेरा अठारह महीने तक चला और दूसरा घेरा चार वर्ष तक चला। इन दोनों घेरों की अपनी “अधिक प्रत्यक्ष” परिपूर्ति उत्तरकाल में होती है, और दोनों घेरे सीधे तौर पर प्रकाशितवाक्य 9:15 में स्थित तीन सौ इक्यान्वे वर्ष और पंद्रह दिनों की भविष्यवाणी से संबद्ध हैं।

प्रकाशितवाक्य 9:10 के पाँच महीनों की आरम्भिक अवधि में एक ऐसा इतिहास सम्मिलित था जो अड़तीस वर्षों की एक अवधि को चिह्नित करता है, जिसका परिपाक चार वर्ष की एक घेराबन्दी में हुआ; यह घेराबन्दी संख्या अड़तीस के साथ सम्बद्ध है, और इसने इस्लाम के उदय को चिन्हित किया। उस चार-वर्षीय घेराबन्दी का समकक्ष उस इतिहास में मिलता है जो तब आरम्भ हुआ जब (पाँच महीने) एक सौ पचास वर्ष समाप्त हुए और तीन सौ इक्यान्वे वर्ष और पंद्रह दिन आरम्भ हुए। यह 27 जुलाई 1449 को आरम्भ हुआ, और चार वर्ष पश्चात्, इस्लाम कॉन्स्टैन्टिनोपल के विरुद्ध पचपन दिनों की एक घेराबन्दी लाया, जो 29 मई 1453 को समाप्त हुई।

जब 27 जुलाई 1449 को आरम्भ हुई समय-संबंधी भविष्यवाणी 11 अगस्त 1844 को समाप्त हुई, तब 1840 से 1844 तक प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के आंदोलन के चार वर्ष, 1333 से 1337 तक की चार-वर्षीय घेराबन्दी के साथ, और 1449 से 1453 तक की चार-वर्षीय अवधि के साथ भी समरेखित हुए। ये तीन गवाह, जो सभी उसी भविष्यसूचक रेखा के प्रत्यक्ष अंग हैं, एक प्रतीकात्मक चार-वर्षीय अवधि का प्रतिनिधित्व करते हैं, जब 1840 से 1844 तक प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों का आंदोलन, तृतीय स्वर्गदूत के आंदोलन के इतिहास में पुनरावृत्त होता है। ये तीन गवाह एक लाख चवालीस हजार के इतिहास में एक चार-वर्षीय घेराबन्दी का प्रतीकरूप हैं। यह चार-वर्षीय अवधि 66 और 70 में यरूशलेम की घेराबन्दियों के द्वारा भी चित्रित की गई है।

66 में सेस्टियुस द्वारा चार-वर्षीय घेराबन्दी का आरम्भ, और फिर 70 में तीतुस द्वारा उसका अंत, चार वर्षों की अवधि के लिए एक अल्फा-चिह्न और एक ओमेगा-चिह्न उत्पन्न करता है। वही अवधि साढ़े तीन वर्षों के रूप में भी प्रस्तुत की जाती है, जो आगे चलकर उन साढ़े तीन भविष्यद्वाणीगत वर्षों के साथ मेल खाती है, जिनमें पोपीय रोम ने पवित्रस्थान को रौंद डाला।

परन्तु जो आँगन मन्दिर के बाहर है, उसे छोड़ दे, और उसका नाप न ले; क्योंकि वह अन्यजातियों को दे दिया गया है; और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक पैरों तले रौंदेंगे। और मैं अपने उन दो साक्षियों को सामर्थ्य दूँगा, और वे टाट ओढ़े हुए एक हजार दो सौ साठ दिन तक भविष्यद्वाणी करेंगे। प्रकाशितवाक्य 11:2, 3.

और वे तलवार की धार से गिरेंगे, और सब जातियों में बन्दी बनाकर ले जाए जाएँगे; और यरूशलेम अन्यजातियों के पैरों तले रौंदा जाएगा, जब तक कि अन्यजातियों का समय पूरा न हो जाए। लूका 21:24।

यह ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है कि मैं Cestius के alpha प्रतीक से लेकर Titus के omega प्रतीक तक द्वारा निरूपित अवधि पर “inclusive” और “exclusive” दोनों प्रकार की गणना का प्रयोग कर रहा हूँ। इससे यह स्पष्ट होता है कि एक ही इतिहास के भीतर समय के दो अनुप्रयोग निरूपित हैं। हम इस बाइबिल सिद्धांत पर पहले ही विचार कर चुके हैं, जब हमने (कई लेख पहले) यीशु के कैसरिया-फिलिप्पी (Panium) के भ्रमण और उनके रूपान्तरण पर्वत की यात्रा के बीच के समय पर विचार किया था। दो बाइबिल लेखक छह दिनों का उल्लेख करते हैं और एक आठ दिनों का।

और छः दिन के बाद यीशु पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लेकर उन्हें अलग एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया। मत्ती 17:1।

और छह दिन के बाद यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर अलग एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गए; और उनके सामने उनका रूपान्तरण हो गया। मरकुस 9:2.

और इन बातों के कोई आठ दिन बाद ऐसा हुआ कि वह पतरस और यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने के लिये पहाड़ पर चढ़ गया। लूका 9:28।

यरूशलेम के विनाश का अंतिम दिनों पर एक “अधिक प्रत्यक्ष” अनुप्रयोग है, और वह विनाश बाबुल और रोम द्वारा निरूपित दो साक्षी हैं। ये दो साक्षी परस्पर एक-दूसरे के अनुरूप हैं, परन्तु सत्य को और अधिक प्रबल करने के लिए भिन्न तथा अनिवार्य भविष्यद्वाणीगत विशेषताएँ प्रदान करते हैं। रोम द्वारा घेराबंदी (66 से 70) चार वर्ष की थी, जो साढ़े तीन वर्ष का भी प्रतिनिधित्व करती है। ये साढ़े तीन वर्ष पवित्रस्थान और सेना के रौंदे जाने से संबद्ध हैं, जिसे अन्यजातिवाद और पोपवाद—दोनों—द्वारा पूरा किया गया। पोपवाद द्वारा रौंदा जाना साढ़े तीन प्रतीकात्मक वर्षों तक रहा, जैसा कि रोम की घेराबंदी के वास्तविक साढ़े तीन वर्षों में पूर्वरूपित किया गया था।

वह चार-वर्षीय घेराबंदी उस भविष्यद्वाणी संबंधी रेखा से जुड़े चार-वर्षीय अवधियों के साथ भी संबंधित है, जो इस्लाम के उठाए जाने की, और उसके बाद पहले और दूसरे तथा फिर तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन के उठाए जाने की पहचान करती है। Cestius से Titus तक का काल papal Rome के चक्र तथा इस्लाम के चक्र—दोनों—को प्रतिच्छेद करता है। Rome का चक्र और Cestius तथा Titus के साढ़े तीन वर्ष, papal Rome के साढ़े तीन प्रतीकात्मक वर्षों को प्रतिच्छेद करते हैं, और इस प्रकार pagan तथा papal Rome—इन दो संस्थाओं—की पहचान कराते हैं। इस्लाम का चक्र उसी इतिहास के द्वारा, जिसे चार वर्षों के रूप में समझा जाता है, संबंधित है; परन्तु जैसे उस इतिहास में Rome के चक्र के साथ है, वैसे ही इस्लाम उस दूसरी शक्ति के साथ संबंधित है जो इस्लाम के चक्र के अधीन है—अर्थात् Adventism। साढ़े तीन वर्षों की अवधि Rome का उसके दोनों चरणों में प्रतिनिधित्व करती है, और चार-वर्षीय अवधि इस्लाम तथा Adventism का प्रतिनिधित्व करती है। भविष्यद्वाणी की दृष्टि से pagan और papal Rome को अलग नहीं किया जा सकता, और न ही इस्लाम और Adventism को।

यह भविष्यद्वक्ता-संबंधी रूप से अपेक्षा करता है कि जब हम बाबुल की घेराबंदी पर विचार करें, तो अठारह-महीने की घेराबंदी के दृष्टांत में समय की दो समझें देखी जानी चाहिए। रोम द्वारा लाई गई घेराबंदी में समय के दो निरूपण, भविष्यद्वक्ता-संबंधी रूप से, नबूकदनेज़र द्वारा लाई गई घेराबंदी में भी समय के दो निरूपणों की अपेक्षा करते हैं। नबूकदनेज़र की अठारह-महीने की घेराबंदी को भी डेढ़ वर्ष के प्रतीक के रूप में समझा जा सकता है। अठारह महीने डेढ़ वर्ष होते हैं, और डेढ़ को 1.5 वर्ष के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। नबूकदनेज़र की घेराबंदी अठारह महीने भी थी और एक दशमलव पाँच (1.5) वर्ष भी।

अठारह महीने उस सामर्थ्य को संबोधित करते हैं जिसे यरूशलेम को रौंद डालना था, और 1.5 वर्ष इस्लाम को संबोधित करते हैं। गणना का वह भविष्यद्वाणीमय चक्र जो अठारह महीनों की पहचान करता है, बाबुल की पहचान करता है, और गणना का दूसरा भविष्यद्वाणीमय चक्र इस्लाम की पहचान करता है। हमने अभी तक यह स्पष्टीकरण प्रस्तुत नहीं किया है कि हम इस्लाम के संबंध में 1.5 वर्षों के अनुप्रयोग तक कैसे पहुँचते हैं, परन्तु यह ध्यान दिया

जाना चाहिए कि समय की ये दो गणनाएँ रोम द्वारा लाई गई विनाश-लीला में पाई जाती हैं, जो रोम के भविष्यद्वाणीमय चक्र से संबद्ध है, (मूर्तिपूजक और पोपीय, दोनों), और दूसरी गणना इस्लाम के भविष्यद्वाणीमय चक्र से संबद्ध है। ये विशेषताएँ यरूशलेम के अल्फा और ओमेगा विनाशों, दोनों में पाई जाती हैं।

सेस्तियुस और टाइटस के साथ यरूशलेम की चार-वर्षीय घेराबंदी उस भविष्यवाणीय क्रम के समापन का प्रतिनिधित्व करती है जो अड़तीस-वर्षीय अवधि के साथ आरम्भ हुआ था और जिसका अंत चार-वर्षीय घेराबंदी के साथ हुआ, जो इस्लाम के ऊँचा उठाए जाने का प्रतीक है; और उसी ठीक उसी क्रम में अंतिम चार-वर्षीय अवधि एक लाख चवालीस हज़ारों के ध्वज के ऊँचा उठाए जाने का प्रतिनिधित्व करती है।

हम इन बातों को अगले लेख में जारी रखेंगे।